Patrika (Indore), 02nd April 2026, Page – 02

शिक्षा सुरक्षा और कम खर्च पर जोर, देश में पढ़ाई की ओर झुकाव | **15-20%** तक बढ़ी स्थानीय व राष्ट्रीय स्तर के संस्थानों में पूछताछ

विदेश से मुड़े विद्यार्थियों के कदम, शहर के संस्थानों में बढ़ा रुझान

पत्रिका सुरभि भावसार
patrika.com

इंदौर. मिडिल ईस्ट में जारी युद्ध और वैश्विक अस्थिरता का असर उच्च शिक्षा पर दिखने लगा है। विदेश में पढ़ाई का सपना देखने वाले युवाओं का रुझान तेजी से बदल रहा है और राष्ट्रीय स्तर के संस्थानों में प्रवेश के लिए पूछताछ में वृद्धि दर्ज की जा रही है। खासकर इंदौर में इसका प्रभाव ज्यादा संगठित रूप से सामने आया है। स्थानीय विवि और राष्ट्रीय संस्थानों में विद्यार्थियों की संख्या और रुचि दोनों बढ़ी हैं। इंदौर से ही हर साल करीब तीन हजार विद्यार्थी पढ़ाई के लिए विदेश जाते हैं।

विशेषकर ईरान-इजरायल-अमरीका तनाव और अन्य वैश्विक संघर्षों के चलते सुरक्षा जोखिम बढ़ने से भारतीय छात्रों की विदेश से वापसी तेज हुई है। हाल ही में ईरान में फंसे 80 से ज्यादा भारतीय छात्रों को भारत लाए। यह बड़े बदलाव का संकेत है। शिक्षा विशेषज्ञों के अनुसार, 2025-26 सत्र में विदेश में एडमिशन लेने वाले भारतीय छात्रों की रुचि में गिरावट और देश में विकल्प तलाशने की प्रवृत्ति में वृद्धि देखी जा रही है। शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि यह बदलाव अस्थायी नहीं, बल्कि दीर्घकालिक हो सकता है। विशेषज्ञ डॉ. अरसी खंडेलवाल बताते हैं कि वैश्विक संघर्षों ने छात्रों को सोचने पर मजबूर किया है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए विदेश जाना ही एकमात्र विकल्प नहीं है। भारत के संस्थान अब उस स्तर पर पहुंच रहे हैं, जहां सुरक्षित व प्रतिस्पर्धी विकल्प बन चुके हैं।

क्यों बदल रहा है ट्रेंड?

1- सुरक्षा सबसे बड़ा फैक्टर
मिडिल ईस्ट और अन्य क्षेत्रों में अस्थिरता ने छात्रों और उनके अभिभावकों की प्राथमिकताएं बदल दी हैं। अब सुरक्षित माहौल सबसे अहम मानदंड बन गया है।

2- बढ़ती लागत व अनिश्चितता
विदेशी शिक्षा की फीस, रहने का खर्च और वीजा से जुड़ी अनिश्चितताएं भी छात्रों को भारत की ओर खींच रही हैं। वे तेजी से विकल्प तलाश रहे हैं।

3- भारत में बेहतर होते अवसर
टॉप संस्थानों में इंटरनेशनल कोर्स और इंडस्ट्री टाइअप, मल्टीनेशनल कंपनियों में प्लेसमेंट, रिसर्च और स्टार्टअप इकोसिस्टम का विस्तार भी हो रहा है।

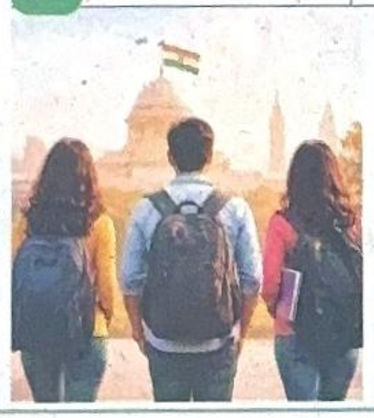

इजरायल से लौटकर कैट की तैयारी

इंदौर के रोहन जैन इजरायल में बिजनेस मैनेजमेंट पढ़ रहे थे। युद्ध की स्थिति बनने पर भारत लौटने का फैसला किया। अब वे यहीं रहकर कैट की तैयारी कर रहे हैं और आइआइएम में प्रवेश का लक्ष्य है। उन्होंने कहा, जो रिस्क वहां है उसके मुकाबले भारत ज्यादा सुरक्षित और स्थिर विकल्प है।

केस स्टडी

दुबई से इंजीनियरिंग छोड़कर आईं सना

खंडवा की सना खान दुबई के निजी यूनिवर्सिटी में इंजीनियरिंग कर रही थीं। क्षेत्रीय तनाव से उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी। अब इंदौर के प्राइवेट इंजीनियरिंग कॉलेज में सेकंड ईयर में लेटरल एंट्री से जुड़ी हैं। सना ने कहा, पहले लगता था विदेश बेहतर है, अब लगा कि भारत में भी अच्छे विकल्प हैं।

शहर के शिक्षण संस्थानों में बढ़ी पूछताछ और एडमिशन

डीएवीवी इस बदलाव का सबसे बड़ा उदाहरण बनकर सामने आया है। विवि के टीचिंग डिपार्टमेंट्स में करीब 12 हजार नियमित विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। संबद्ध कॉलेजों सहित कुल संख्या 3 लाख तक पहुंचती है। पिछले दो अकादमिक सत्रों (2024-25 और 2025-26) में एप्लिकेशन और काउंसलिंग पूछताछ में 15-20 फीसदी तक वृद्धि दर्ज की गई है (संस्थागत अनुमानों के अनुसार)। विवि प्रशासन का मानना है कि जो विद्यार्थी विदेश जाने की तैयारी में थे, अब वे डीएवीवी के प्रोफेशनल कोर्सेज को प्राथमिकता दे रहे हैं।

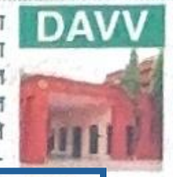

IIT

देश के शीर्ष तकनीकी संस्थानों में शामिल आइआइटी इंदौर में भी बदलाव महसूस किया जा रहा है। संस्थान के अनुसार, पिछले दो साल में विदेश से लौटे या विदेश का विकल्प छोड़ने वाले विद्यार्थियों की रुचि बढ़ी है। बीटेक, एमटेक और रिसर्च प्रोग्राम्स में काउंसलिंग स्तर पर प्रतिस्पर्धा ज्यादा कड़ी हुई है। उच्च गुणवत्ता वाले लैब, रिसर्च और प्लेसमेंट के कारण विद्यार्थी अब भारत में ही ग्लोबल स्तर की शिक्षा देख रहे हैं।

IIM

प्रबंधन शिक्षा में भी यह ट्रेंड स्पष्ट है, खासकर आइआइएम इंदौर जैसे संस्थान में सामने आ रहा है। एमबीए इंटरनेशनल बिजनेस और फाइनेंस कोर्सेज में विदेश विकल्प छोड़ने वाले विद्यार्थियों के आवेदन हाल ही में अचानक बढ़े हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, देश में मैनेजमेंट ग्रेजुएट्स के लिए बेहतर प्लेसमेंट और पैकेज भी एक बड़ा कारण है। ऐसे में पूरी संभावना जताई जा रही है कि आने वाले दिनों में विदेश जाने वाले विद्यार्थी आइआइएम की ओर ज्यादा रुख करेंगे।